ISSN-2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS

Original Research Article

भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका

* प्रा. रेश्मा भरत कांबळे,

सहायक प्राध्यापक, मॉडर्न कॉलेज, शिवाजी नगर.

प्रस्तावना :

भाषा हमारे विचारों को, भावनाओं को आदान-प्रदान करने का माध्यम है। भाषा ही एक ऐसा माध्यम हे जो हम मनुष्य को अन्य प्राणियों के उपर और अलग रखता है। इस संसार में जितने भी सजीव है, उसमें मात्र मानव ही ऐसा प्राणी है जो बोल सकता है| हमारा भारत देश एक बहुभाषी देश है, जहाँ 22 भाषाओं को संविधान में मान्यता प्राप्त है। अत: जब दो भिन्न भाषाओं के देश में लोगों को वार्तालाप करने की समस्या उत्पन्न होती है तब वहाँ मात्र अनुवाद ही समस्या का हल बनकर सामने आता है।

अनुवाद एक भाषा से दूसरी भाषा में अर्थ के अन्तरण की प्रक्रिया है। आधुनिक युग में अनुवाद का महत्त्व काफी बढ़ गया है। अनुवाद को कला और विज्ञान रूप में देखा जा रहा है। इन सभी बातों में एक विशेष बात यह देखी जाती है कि हमारी हिंदी भाषा आज संसार की अधिक लोकप्रिय भाषाओं में से एक लोकप्रिय भाषा है। बहुत पहले ही रविंद्रनाथ टागोर ने हिंदी को एक महानदी के रूप में माना है। हिंदी हमारी राजभाषा है| पर अपने समृद्ध हिंदी और सुगमता के कारण आज हिंदी को लोगों ने मातृभाषा, संपर्क भाषा, साहित्यिक भाषा और जनभाषा के रूप में स्वीकार किया है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY-NC 4.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium for non-commercial use provided the original author and source are credited.

अनुवाद की उपयोगिता:

कथासाहित्य और अनुवाद :

कथासाहित्य में कहानियों| उपन्यासों और अन्य विधाओं के अनुवाद हम करते है। अनुवाद के माध्यम से हम देश के अलग-अलग भाषाओं का अनुवाद हिंदी में कर सकते है।

कविता और अनुवाद :

कविता के पुन: सृजन के लिए एक संवेदनशील अनुवादक की ही जरूरत होती है। जो स्वयं एक कवि हो और अन्य दुसरी भाषा की जानकारी रखता हो। वही इस कार्य को अच्छी तरह से कर सकता है। अनुवाद के कारण आज अनेक काव्यों का एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद संभव हुआ है। उदा. रामचरितमानस, टैगोर का गीतांजली।

नाटक और अनुवाद:

नाटक में रस को विशेष महत्त्व होता है। अत: इससे स्पष्ट होता है कि जिन अनुवादक में नाटय लेखन की विशेष क्षमता मौजूद है, वही अनुवादक नाटक का दुसरी भाषा में अनुवाद कर सकता है। नाटकानुवाद की सफलता संवाद, रंगमंच की दृष्टि से विशेष महत्त्व रखता है। उदा. भारतेंदु के अनुवादित नाटक|

ISSN-2278-5655
AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal
Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025
OPEN ACCESS
Original Research Article

लोकसाहित्य और अनुवाद :

साहित्य समाज का दर्पण होता है| अत: हर भाषा का अपना-अपना साहित्य होता है| भारत एक सर्व धर्म भाषी देश होने के नाते साहित्य प्रेमी अनेक भाषाओं के साहित्य भी होते है| इस संदर्भ में लोकसाहित्य पढ़ने में अनुवाद अपनी जिम्मेदारी निभाते है।

विश्वभाषाओं के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद :

14 सितंबर यह दिन हम हिंदी दिवस के रूप में मनाते है।

i) राजभाषा के रूप में हिंदी :- 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा घोषित करके संविधान क अनुच्छेद 343 से 351 तक विशेष प्रावधान दिए गए है। आज राजभाषा हिंदी ने अनुवाद क आधार पर अपनी विशिष्ट संरचना बना ली है। अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार के बड़े अवसर देखे जा रहे है। आज हिंदी विश्व में सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा है।

ii) संपर्क भाषा/ जनभाषा :- वस्तुतः हिन्दी भाषा खड़ी बोली का ही विकसित रूप है, जिसमें अनेक देशी और विदेशी शब्दावली समाहित है। हिंदी भाषा संस्कारित होकर अधिक राज्यों में राजकाज का माध्यम बन गई। आज हिंदी बहुसंख्यक वर्ग या विशाल जनसमुदा य की भाषा है। क्षेत्र की मांग के अनुरूप उस भाषा में परिवर्तन आता है। उसमें नयापन जाता है। दो व्यक्तियों बीच जिस अपौचारिक भाषा में बोलने की प्रक्रिया सहज रूप में संपन्न अर्थ है, वह बोलचाल की भाषा कहलाती है|

अनुवाद के सांस्कृतिक संदर्भ:

भाषा का संबंध संस्कृति से होता है। देश की भाषा देश के स्वाभिमान और आत्मा के विश्वास को जताती है। राष्ट्रभाषा संपूर्ण देश की होती है। राष्ट्रभाषा हिंदी के माध्यम से ही हमारी संस्कृतिक गरिमा और भावनात्मक एकता का पोषण होता गया है। अनुवाद एक ऐसा सेतु बंधन का कार्य है जिसके बिना विश्व संस्कृत का विकास नहीं होता। अनुवाद के द्वारा हम मानव के विश्व कुटुंब में संपूर्ण एकता एवं समझदारी की भावना विकसित कर मानवीय एकता के मूल बिंदु तक पहुंच सकते है|

अनुवाद समीक्षा एवं मूल्यांकन :

अनुवाद की संमीक्षा एवं मूल्यांकन करते समय हमारे ही सामने अनेक प्रश्न निर्माण होता है। अनुवाद करते समय शब्दों की, वाक्यों की सटीकता देखनी पड़ती है। अनुवाद करते समय शब्द का अर्थ बदलना चाहिए| इसका भी पूरा मूल्यांकन अनुवादक को करना पड़ता है।

अनुवाद की समस्याएँ:

अनुवाद में समतुल्यता की खोज करते समझ अनुवादक को अनेक समस्याओं का समाधान करना पड़ता है। अनुवाद में समस्या उत्पन्न करनेवाला प्रमुख कारण है भाषाओं की भिन्न प्रकृति| जिस साहित्य का दूसरे उस भाषा में अनुवाद करता है जैसे कि- मुहावरे, अलंकार आदि|

रक्षा क्षेत्र एवं अनुवाद :

रक्षा के क्षेत्र में अनुवाद का विशेष योगदान होता हैं। नागरिकों के लिए क्षेत्रीय बोली में और उसके साथ ही हिंदी और अंग्रेजी में अनुवादित सूचनाओं के फलक लगाए जाते है| इससे जो नागरिक अंग्रेजी जानते समजते है वे अंग्रेजी अनुवाद पढ़ते है| और सामान्य जनता हिंदी के अनुवाद भाषा में समज लेते है|

ISSN–2278-5655

AMIERJ Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal

Volume–XIV, Special Issues – III (a) Nov – Dec, 2025

OPEN ACCESS

Original Research Article

प्रादेशिक भाषाओं के विकास में अनुवाद :

अनुवाद प्रादेशिक भाषाओं के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है| यह ज्ञान के प्रसार में मदद करता है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत शोध पत्र में अनुवाद के विविध पहलूओं का वर्णन किया है| आज शिक्षण संस्थाओं, पर्यटन, पत्रकारिता, सरकारी कार्यालयों आदि में हिन्दी में अनुवाद की जरूरते देखी जा रही है| 'अनुवाद' ही ऐसा विकल्प है जो विश्व की एकता को परिभाषित कर सकता है|

वैसे देखा जाए तो अनुवाद एक मात्र साहित्यिक कार्य नही है, अपितु उसकी पहचान जीवन के हर क्षेत्र में सक्रिय साधन के रूप में उभरी है| उपयुक्त विधानों के आधार पर हम यह कह सकते है कि भारत जैसे बहुभाषी और विविधताओं से भरे देश में राष्ट्रीय एकता के सूत्र में समेटने की ताकद अनुवाद में है|

संदर्भ ग्रंथ :

1. *हिंदी अनुवाद : नई दिशाएं और संभावनाएँ - डॉ. मीरा कुमारी*
2. *अनुवाद : सिद्धांत एवं प्रयोग - जी. गोपीनाथन*
3. *आधुनिक जनसंचार माध्यमों में हिंदी - डॉ. जय प्रकाश पाण्डेय*

Cite This Article:

प्रा. कांबळे रे. भ. (2025). *भाषा एवं साहित्य के विकास में अनुवाद की भूमिका.* **In Aarhat Multidisciplinary International Education Research Journal**: Vol. XIV (Number VI, pp. 180–182). ***Doi:*** *https://doi.org/10.5281/zenodo.18007708*